

वाटरशेड के मूल्यांकन का प्रभाव

Impact Evaluation of watershed

नाबार्ड ने विभिन्न एजेंसियों के माध्यम से पूर्ण हो चुकी वाटरशेड परियोजनाओं में प्रभाव और मध्यावधि मूल्यांकन अध्ययन किया है. ऐसे अध्ययनों के प्रमुख निष्कर्ष निम्नानुसार हैं:

NABARD has conducted impact & mid-term evaluation studies in completed watershed projects through different agencies. Major findings of such studies are as under:

क. केंद्रीय मृदा और जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीएसडब्ल्यूसीआरटीए), देहारादून (अध्ययन क्षेत्र – महाराष्ट्र)

a. Central Soil and Water Conservation Research and Training Institute (CSWCRTA), Dehradun (Study Area – Maharashtra)

- खेती के तहत क्षेत्र में 35% तक की वृद्धि.
Increase in area under cultivation up to 35%.
- विभिन्न फसलों की उत्पादकता में वृद्धि (29% - 153%).
Increase in the productivity of various crops (29% - 153%).
- वाटरशेड क्षेत्रों में भूमिगत जल पुनर्भराव में महत्वपूर्ण वृद्धि.
Significant increase in ground water recharge in watershed areas.
- वाटरशेड में निवल बुआई क्षेत्र (26% से 35%) और सिंचाई क्षेत्र (29% तक) में वृद्धि.
Increase in the net sown area (26% to 35%) and irrigated area (up to 29%) in the watersheds.
- फसल सघनता में वृद्धि (114% से 133%).
Increase in cropping intensity (114% to 133%).
- वाटरशेड परियोजना क्षेत्रों (गावों) में रोजगार के अवसरों के सृजन के कारण प्रवासन में कमी.
Reduction in migration due to creation of employment opportunities in the watershed project areas (villages).

ख. केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद (अध्ययन क्षेत्र – आंध्र प्रदेश)

b. Central Research Institute for Dryland Agriculture (CRIDA), Hyderabad (Study Area- Andhra Pradesh)

- प्रति किसान औसत सिंचित क्षेत्र में 133% की वृद्धि दर्ज की गई.
The average irrigated area per farmer registered 133% increase

- गंगपुर वाटरशेड में पंजीकृत भू-जल स्तर में खुले कुएं और बोरवेल के मामले में क्रमशः 40 और 25 प्रतिशत तक का सुधार हुआ है।

Improvement in groundwater level registered in Gangapur watershed to the extent of 40 and 25 per cent in case of open wells and bore wells, respectively.

- खरीफ मौसम में बेसलाइन की तुलना में वर्ष के दौरान फसलों की उत्पादकता में वृद्धि देखी गई जिसमें अधिकतर उड़द में (90%), इसके बाद लाल चना (73%), मक्का (55%), कपास (51%), ज्वार (47%) और सब्जियाँ (33%) पाया गया था।

The increase in productivity of crops observed in the year over baseline in the kharif season was found to be higher in black gram (90%), followed by red gram (73%), maize (55%), cotton (51%), jowar (47%) and vegetables (33%).

- तीनों वाटरशेड में गैर-संस्थागत स्रोतों (मनीलेंडर) से ऋण बकाया में कमी हुई।

The loan outstanding from non-institutional sources (moneylenders) decreased in the three watersheds.

ग. भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान केंद्र, बेल्लारी, कर्नाटक (अध्ययन क्षेत्र- कर्नाटक)

c. Indian Institute of Soil and Water Conservation Research Centre, Bellary, Karnataka (Study Area – Karnataka)

- फसल सघनता में वृद्धि के साथ फसल उत्पाद में नाममात्र वृद्धि (2-6.8%) हुई।

There was a marginal increase in crop production (2-6.8%) with increase in cropping intensity.

- फसल विविधीकरण पर प्रभाव (सब्जियों की खेती- पत्ता गोभी, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, फूल गोभी- सुरक्षात्मक सिंचाई के तहत)।

Impact on crop diversification (cultivation of vegetables – cabbage, tomato, chilli, capsicum and cauliflower- under protective irrigation).

- पूरे वर्ष के दौरान भूमिगत जल की उपलब्धता में वृद्धि जो सिंचाई के तहत क्षेत्र में वृद्धि से भी व्यक्त हुई थी।

Increase in the availability of ground water all through the year which was also manifested by increase in area under irrigation.

- सामान्य तौर पर, काली मिट्टी में मृदा की हानि में 20-35% तक की कमी हुई थी, यह काली मिट्टी अत्याधिक फैलने योग्य होती है।

In general, there was reduction in soil loss, ranging from 20-35%, in black soils, which are highly dispersible.

घ. भारतीय ग्रामीण प्रबंधन संस्थान आनंद (अध्ययन क्षेत्र- महाराष्ट्र)

d. Indian Institute of Rural Management Anand (Study Area- Maharashtra)

- 89% किसानों ने कृषि गतिविधियों में वृद्धि की सूचना दी.
89% farmers reported increased farming activities
- 92% किसानों ने मृदा क्षरण में कमी की सूचना दी.
92% farmers reported decrease in soil erosion.
- 87% प्रतिवादियों ने मृदा की नमी में वृद्धि की सूचना दी और 93% प्रतिवादियों ने जल स्तर में वृद्धि की सूचना दी.
87% respondents reported increase in soil moisture and 93% reported increase in water level.
- मौसमी परिवर्तन में 74.6% से 68.4% तक की कमी हुई.
Decrease in seasonal migration from 74.6% to 68.4%.
- पेयजल की बेहतर उपलब्धता के साथ जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है.
The quality of life has improved with better availability of drinking water.
- भूमिगत जल पुनर्भराव में सुधार.
Improvement in ground water recharge.
- फसल सघनता में वृद्धि.
Increase in cropping intensity.